-3-	–३–
Maps Are Political Opinions, Not Facts: the Earth Is Not 'Yours' and 'Mine'	मानचित्र राजनैतिक धारणाएं हैं––तथ्य नहीं : पृथ्वी 'आपकी' या 'मेरी' नहीं है
So, we have lost our relationship with nature. If once we understood that relationship, its real significance, then we would not divide property into yours and mine; though one might own a piece of land and build a house on it, it would cease to be 'mine' or 'yours' in the exclusive sense—it would be more a means of taking shelter. Because we do not love the earth and the things of the earth but merely utilize them, we are insensitive to the beauty of a waterfall, we have lost the touch of life, we have never sat with our backs against the trunk of a tree; and since we do not love nature, we do not know how to love human beings and animals.	इस प्रकार प्रकृति के साथ हम अपना संबंध खो बैठे हैं। यदि एक बार हम इस संबंध को समझ लें, इसके महत्त्व को समझ लें, तो फिर हम जमीन–जायदाद को 'तेरे–मेरे' में नहीं बांटेंगे––तथापि हो सकता है कि किसी के पास कोई एक भूखंड हो जिस पर वह भवन निर्माण कर ले, परंतु यह विशिष्ट अर्थ में 'तेरा–मेरा' नहीं रह जाएगा। बल्कि वह केवल सिर छुपाने का आसरा बन जाएगा। चूंकि हम पृथ्वी को अथवा इसकी चीज़ों को प्रेम नहीं करते, उनका बस उपयोग करते हैं, इसीलिए झरनों के सौंदर्य के प्रति हम उदासीन हो गये हैं, हमारा जीवन से मानो सरोकार ही नहीं रह गया है, हम किसी वृक्ष के तने से पीठ सटाकर कभी नहीं बैठते––और चूंकि हम प्रकृति को प्रेम नहीं करते, इसीलिए यह भी नहीं जान पाते कि मानव को और पशु–पक्षियों को प्रेम कैसे किया जाए।
-4-	–४–
We Are Caretakers, Each of Us Temporary at That	हम तो रखवाले हैं, और वह भी अस्थायी
It does not mean that you cannot use the earth, but you must use the earth as it is to be used. Earth is there to be loved and cared for, not to be divided as 'yours' and 'mine'. It is foolish to plant a tree; in a compound and call it 'mine'.	इसका तात्पर्य यह नहीं है कि आप पृथ्वी का प्रयोग नहीं कर सकते। जिस प्रकार यह प्रयोज्य है उस प्रकार तो इसका प्रयोग आपको करना ही चाहिये। पृथ्वी इसलिए है कि उससे प्रेम करें, उसकी देखभाल करें, 'तेरे' मेरे' में बांटें नहीं। किसी अहाते में कोई वृक्ष लगाना और उसको 'मेरा' कहना मूर्खता ही है।
CHAPTER FIVE	**अध्याय पांच**
Marriage: Love and Sex	**विवाहः प्रेम और यौनाचार**
-1-	–१–
Is Marriage Mutual Use?	विवाह क्या परस्पर प्रयोग है?

Now, do you call it love when in your relationship with your wife there is possessiveness, jealousy, fear, constant nagging, dominating, and asserting? Can that be called love? When you possess a person and thereby create a society which helps you to possess the person, do you call that love? When you use somebody for your sexual convenience or in any other way, do you call that love? Obviously it is not. That is, where there is jealousy, where there is fear, where there is possessiveness, there is no love. Surely, love does not admit of contention, of jealousy. When you possess, there is fear and though you may call it love, it is far from love. Experience it, sirs and ladies, as we go along. You are married and have children; you have wives or husbands whom you possess, whom you use, of whom you are afraid or jealous. Be aware of that and see if it is love.	यदि अपनी पत्नी के साथ संबंध में आप में स्वामित्व की भावना है, ईर्ष्या है, भय है, निरंतर त्रुटियां तलाशना है, उस पर हावी रहना है, उसके साथ हठधर्मिता करना है--तो क्या आप इसे प्रेम कहेंगे? क्या इसे प्रेम कहा जा सकता है? जब आप किसी व्यक्ति पर मालिकाना हक जताते हों और तदनुसार एक ऐसा समाज रचित कर लेते हों जो आपको उस व्यक्ति पर मालिकाना हक जताने में आपकी मदद करता हो, तो क्या आप उसे प्रेम कहेंगे? जब आप किसी व्यक्ति को अपनी यौन-सुविधा के लिये या किसी अन्य प्रयोजन से प्रयोग करते हों, तो क्या आप उसे प्रेम कहेंगे? यह बिल्कुल स्पष्ट है कि यह सब प्रेम नहीं है। अर्थात, जहां ईर्ष्या हो, जहां भय हो, स्वामित्व भावना हो, वहां प्रेम नहीं हो सकता। निश्चय ही प्रेम में कलह और ईर्ष्या का प्रवेश नहीं होता। जब आप स्वामित्व भावना रखते हैं तब उसमें भय भी रहता है। आप इसे प्रेम भले ही कह लें, परंतु यह प्रेम से कोसों दूर होता है। महोदय, जैसे-जैसे हम आगे बढ़ रहे हैं, वैसे-वैसे आप इसे अनुभूत करते जाइए। आप विवाहित हैं, और आपके बच्चे भी हैं, आपके पति या पत्नी भी हैं जिन पर आप स्वामित्व भाव रखते हैं, जिन्हें आप प्रयोग कर रहे हैं, जिनसे आप भयग्रस्त या ईर्ष्याग्रस्त रहते हैं। इस सब के प्रति तनिक सजग हो जाइए और देखिए कि क्या यह प्रेम है।
-2-	-२-
Love Cannot Be Thought About	प्रेम के विषय में सोचा नहीं जा सकता
You can think about a person whom you love, but you can-not think about love. Love cannot be thought about; though you may identify yourself with a person, a country, a church, the moment you think about love, it is not love—it is merely mentation...Because the mind is active, it fills the empty heart with the things of the mind; and with these things of the mind we play, we create problems...The problems are the product of the rnind, and for the rnind to solve its own problem it has to stop, for only when the mind stops is there love.	आप उस व्यक्ति के बारे में सोच सकते हैं जिसे आप प्रेम करते हैं, परंतु आप प्रेम के बारे में नहीं सोच सकते। प्रेम को सोचा नहीं जा सकता। भले ही किसी व्यक्ति, किसी देश, किसी पूजास्थल के साथ आप अभिन्नभाव रखते हों, परंतु जिस पल आप प्रेम के बारे में सोचते हैं वह प्रेम होता ही नहीं है--वह तो केवल एक मानसिक प्रक्रिया होती है...चूंकि मन सक्रिय रहता है, अतः वह रीते हृदय को अपनी चीज़ों से भर देता है, और मन की उन चीज़ों के साथ हम खेलते रहते हैं, समस्याएं खड़ी करते रहते हैं...समस्याएं मन की उपज होती हैं। अतः मन को अपनी समस्याओं के

fromF&LF	इसीलिए हम इसकी तलाश में भटकते रहते हैं--एक नेता से दूसरे नेता के पास, एक धार्मिक संगठन से दूसरे के पास, एक गुरु से दूसरे गुरु के पास।
Now, is it that we are seeking happiness or is it that we are seeking gratification of some kind from which we hope to derive happiness? There is a difference between happiness and gratification. Can you seek happiness? Perhaps you can find gratification but surely you cannot find happiness. Happiness is derivative; it is a by-product of something else. So, before we give our minds and hearts to something which demands a great deal of earnestness, attention, thought, care, we must find out, must we not, what it is that we are seeking; whether it is happiness, or gratification? I am afraid most of us are seeking gratification. We want to be gratified, we want to find a sense of fullness at the end of our search.	तो क्या हम इस खुशी, इस सुख-चैन को खोज रहे हैं या एक ऐसी परितुष्टि चाह रहे हैं जिससे हमें खुशी मिल पाने की आशा है? खुशी और परितोष में अंतर है। क्या खुशी को, सुख-शांति को भला खोजा जा सकता है? हो सकता है कि आपको परितोष प्राप्त हो जाये, परंतु प्रसन्नता कदापि नहीं। प्रसन्नता, सुख-शांति तो परोक्ष होती है, किसी अन्य चीज़ का उपजात होती है। तो इससे पहले कि हम अपना दिल-औ'-दिमाग किसी ऐसी चीज़ में लगा दें जिसमें अत्यधिक लगन, पूरे ध्यान, विचारशीलता और सावधानी की दरकार हो, क्या हमें यह जान नहीं लेना चाहिए कि आखिर वह है क्या जिसके पीछे हम दौड़ पड़े हैं? वह खुशी है या परितुष्टि है? मुझे यह कहने में अफसोस होता है कि अधिकतर लोग परितोष चाहते हैं। हम परितुष्ट होना चाहते हैं, अपनी तलाश के अंत में एक तृप्ति-भाव चाहते हैं।
After all, if one is seeking peace one can find it very easily. One can devote oneself blindly to some kind of cause, to an idea, and take shelter there. Surely that does not solve the problem. Mere isolation in an enclosing idea is not a release from conflict. So we must find, must we not, what it is—inwardly, as well as outwardly—that each one of us wants? If we are clear on that matter, then we don't have to go anywhere, to any teacher, to any church, to any organization. Therefore our difficulty is, to be clear in ourselves regarding our intention, is it not? Can we be clear? And does this clarity come through searching, through trying to find out what others say, from the highest teacher to the ordinary preacher in a church around the corner? Have you got to go to somebody to find out? Yet that is what we are doing, is it not? We read innumerable books, we attend many meetings and	यदि कोई शांति चाहे तो उसे यह बड़ी सरलता से मिल सकती है--वह किसी प्रकार के हेतु या किसी मत-विचार के प्रति स्वयं को समर्पित कर दे, उसकी शरण में चला जाए। परंतु निश्चित ही इससे समस्या का समाधान नहीं होगा। किसी परिबद्ध मत-विचार की चार दीवारी में एकांतवास कोई द्वंद्व से मुक्ति नहीं है। इसलिये क्या हमें यह नहीं जान लेना चाहिए कि आंतरिक रूप से और बाहरी रूप से भी, वह क्या है जिसे प्रत्येक व्यक्ति चाहता है? यदि हम इस विषय में स्पष्ट हो जाएं तो फिर हमें कहीं जाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी--न किसी गुरु के पास, न किसी पूजा स्थल में, न किसी संगठन में। तो हमारी कठिनाई है--अपने ही आशय के बारे में स्वयं स्पष्ट न हो पाना--यही है न? क्या हम स्पष्ट हो सकते हैं? और क्या यह स्पष्टता किसी तलाश द्वारा या दूसरों की कही गई बातों द्वारा या किसी साधारण प्रवचनकर्ता से लेकर किसी पहुंचे हुए गुरु को सुनकर प्राप्त की जा सकती है? इस स्पष्टता को जानने के लिए क्या

	निवारण हेतु ठहर जाना होगा, क्योंकि जब मन ठहर जाता है, प्रेम तभी आ पाता है।
-3-	–३–
When You Know How to Love One You Know How to Love the Whole	जब आप किसी एक को प्रेम करना जान लेंगे तब सारे संसार को प्रेम करना जान जाएंगे
Love cannot be thought about, love cannot be cultivated, love cannot be practiced. The practice of love, the practice of brotherhood, is still within the field of the mind; therefore, it is not love. When all this has stopped, then love comes into being, then you will know what it is to love. Then love is not quantitative, but qualitative. You do not say, "I love the whole world," but when you know how to love one, you know how to love the whole. Because we do not know how to love one, our love of humanity is fictitious. When you love, there is neither one nor many—there is only love. It is only when there is love that all our problems can be solved, and then we shall know its bliss and its happiness.	प्रेम को सोचा नहीं जा सकता, प्रेम को उपजाया नहीं जा सकता, प्रेम का अभ्यास नहीं किया जा सकता। प्रेम का अभ्यास करना, भाईचारे का अभ्यास करना सदा मन की परिधि में ही रहता है, अतः यह सब प्रेम नहीं होता। जब यह सब थम जाता है, तब प्रेम प्रवेश करता है, तब आप जान पाते हैं कि यह प्रेम करना होता क्या है। तब आप यह नहीं कहेंगे, ‘‘मैं सारे संसार को प्रेम करता हूं’’, बल्कि जब आप किसी एक को भी प्रेम करना जान लेंगे तब आप सारे संसार को प्रेम करना जान जाएंगे। परंतु, हम किसी एक को भी प्रेम करना नहीं जानते, मानवता के प्रति हमारा प्रेम कृत्रिम है। जब आप प्रेम करते हैं, तब वह न एक के लिए होता है, न अनेक के लिए––वह तो बस प्रेम होता है। जब प्रेम होता है, केवल तभी हमारी सारी समस्याओं का समाधान हो सकता है, और तभी हम इसका आनंद व सुख जान पाते हैं।
-4-	–४–
Love in Relationship	संबंध में प्रेम
Love in relationship is a purifying process as it reveals the ways of the self.	संबंधों में प्रेम एक शुद्धीकरण की प्रक्रिया है क्योंकि यह अहं के रंग–ढंग को प्रकट करता रहता है।
How easy it is to destroy the thing we love! How quickly a barrier comes between us, a word, a gesture, a smile! Health, mood, and desire cast a shadow, and what was bright becomes dull and burdensome. Through usage we wear ourselves out, and that which was sharp and clear becomes wearisome and confused. Through constant friction, hope and frustration, that which was beautiful	जिस चीज़ को हम प्रेम करते हैं उसे नष्ट करना कितना सरल है। हमारे बीच अवरोध पल भर में खड़ा हो जाता है––कोई शब्द, कोई भाव–भंगिमा, कोई मुस्कान। स्वास्थ्य, मनोदशा और इच्छा के काले बादल इस पर मंडराने लगते हैं और जो अभी चमक–दमक रहा था वह धूमिल और बोझिल बन जाता है। प्रयुक्त होते–होते हम स्वयं को खपा डालते हैं और जो उद्दांत और प्रखर था, वह श्रांत–क्लांत और भ्रमित हो जाता है। जो सुंदर और सरल

and simple becomes fearful and expectant. Relationship is complex and difficult, and few can come out of it unscathed. Though we would like it to be static, enduring, continuous, relationship is a movement, a process which must be deeply and fully understood and not made to conform to an inner or outer pattern. Conformity, which is the social structure, loses its weight and authority only when there is love. Love is a purifying process as it reveals the ways of the self. Without this revelation, relationship has little significance.	था, निरंतर संघर्ष, आशा और हताशा के चलते वह भयानक और अपेक्षी बन जाता है। संबंध जटिल और कठिन होते हैं। और शायद ही कोई इनसे अनाहत रहा हो। यद्यपि हम इसको स्थिर, टिकाऊ और सतत रखना चाहते हैं, परंतु संबंध तो एक प्रवाह होता है, एक ऐसा प्रक्रम होता है जिसे गहराई तक और पूरी तरह समझना ज़रूरी है, न कि इसे किसी आंतरिक या बाहरी ढर्रे की लीक पर चलने को मजबूर करना। लीक पर चलना, अनुकरण करना एक सामाजिक ढर्रा है, परंतु यह अपना दबाव और अपनी प्रभुता तब खो देता है जब प्रेम प्रवेश करता है। प्रेम एक शुद्धीकरण की प्रक्रिया है, क्योंकि यह अहं के, स्व के रंग-ढंग को प्रकट करता रहता है। इस प्राकट्य के बिना संबंध का कोई महत्त्व नहीं रह जाता।
-5-	-५-
We Do Not Love; We Crave to Be Loved	हम प्रेम नहीं करते बल्कि प्रेम पाने को लालायित रहते हैं
But how we struggle against this revelation! The struggle takes many forms: dominance or subservience, fear or hope, jealousy or acceptance, and so and on. The difficulty is that we do not love; and if we do love we want it to function in a particular way, we do not give it freedom. We love with our minds and not with our hearts. Mind can modify itself, but love cannot. Mind can make itself invulnerable, but love cannot; mind can always withdraw, be exclusive, become personal or impersonal. Love is not to be compared and hedged about. Our difficulty lies in that which we call love, which is really of the mind. We fill our hearts with the things of the mind and so keep our hearts ever empty and expectant. It is the mind that clings, that is envious, that holds and destroys. Our life is dominated by the physical centers and by the mind. We do not love and let it alone, but crave to be loved; we give in order to receive, which is the generosity	परंतु हम इस प्राकट्य के विरुद्ध क्या-क्या नहीं करते। हमारा यह मुकाबला नाना रूप धर कर आता है : हावी रहना या ताबेदार होना, भय या आशा, ईर्ष्या या मान्यता, इत्यादि। कठिनाई यह है कि हम प्रेम नहीं करते, और करते भी हैं तो चाहते हैं कि यह हमारी अपेक्षानुसार कार्य करे--हम इसे स्वतंत्रता नहीं देते। हम अपने मन से प्रेम करते हैं, हृदय से नहीं। मन स्वयं को बदल सकता है परंतु प्रेम नहीं। मन अपने खिड़की-दरवाज़े बंद कर सकता है, किलाबंदी कर सकता है, परंतु प्रेम ऐसा नहीं कर सकता। मन कभी भी स्वयं में सिमट सकता है, अलग-थलग हो सकता है, वैयक्तिक या निर्वैयक्तिक हो सकता है; प्रेम की न तुलना की जा सकती है, न इसे चारदीवारी में बंद किया जा सकता है। हमारी कठिनाई उसीमें है जिसे हम तो प्रेम कह देते हैं, परंतु होता वह सारा मन का मामला है। हम अपने हृदय को मन की चीज़ों से भरते रहते हैं और इसीलिए अपने हृदय को सदैव खाली और अपेक्षी बनाए रखते हैं। यह मन ही है जो चिपकता है, ईर्ष्यालु होता है, पकड़ता-जकड़ता है और

of the mind and not of the heart. The mind is ever seeking certainty, security; and can love be made certain by the mind? Can the mind, whose very essence is of time, catch love, which is its own eternity?	विनाश करता है। हमारे जीवन पर दैहिक केंद्रों का प्रभुत्व रहता है और या फिर रहता है मन का। ऐसा नहीं होता कि हम बस प्रेम करें, बल्कि प्रेम पाने को लालायित रहते हैं। हम देते इसलिए हैं ताकि पा सकें--ऐसी 'उदारता' मन की हो सकती है, हृदय की नहीं। मन सदैव सुनिश्चितता और सुरक्षा चाहता रहता है, तो क्या मन द्वारा प्रेम सुनिश्चित किया जा सकता है? काल में जीने वाले मन की पहुंच क्या उस प्रेम तक हो सकती है जो स्वयं में अनंत व असीम है?
But even the love of the heart has its own tricks; for we have so corrupted our heart that it is hesitant and confused. It is this that makes life so painful and wearisome. One moment we think we have love, and the next it is lost. There comes an. imponderable strength, not of the mind, whose sources may not be fathomed. This strength is again destroyed by the mind; for in this battle the mind seems invariably to be the victor. This conflict within ourselves is not to be resolved by the cunning mind or by the hesitant heart. There is no means, no way to bring this conflict to an end. The very search for a means is another urge of the mind to be the master, to put away conflict in order to be peaceful, to have love, to become something.	परंतु, हृदय के प्रेम के अपने चकमे हैं, क्योंकि हमने हृदय को इतना भ्रष्ट कर दिया है कि वह अनिश्चित व भ्रमित हो गया है, इसी कारण जीवन इतना वेदनामय और नीरस हो गया है। एक पल हम सोचते हैं कि हममें प्रेम है, परंतु दूसरे ही पल वह तिरोहित हो जाता है। एक अकल्पनीय ऊर्जा का आगमन होता है, वह ऊर्जा मन की नहीं होती, और उसके स्रोत को मापा नहीं जा सकता। फिर यह ऊर्जा मन द्वारा नष्ट कर दी जाती है, क्योंकि इस युद्ध में मन सदैव विजयी होता लगता है। हमारे भीतर चल रहे इस द्वंद्व का समाधान चालाक मन या अनिश्चित हृदय द्वारा नहीं किया जा सकता। इस द्वंद्व का अंत करने का कोई साधन, कोई तरीका नहीं है। किसी साधन की तलाश मन की दूसरी चाहत बन जाती है--स्वामी बनने के लिये, शांति पाने हेतु, द्वंद्व का अंत करने के लिये, प्रेम पाने के लिये, या कुछ बन जाने के लिये।
-6-	-६-
Love Is Not Yours or Mine	प्रेम आपका या मेरा नहीं होता
Our greatest difficulty is to be widely and deeply aware that there is no means to love as a desirable end of the mind.When we understand this really and profoundly, then there is a possibility of receiving something that is not of this world. Without the touch of that something, do what we will, there can be no lasting happiness in relationship. If you have received that benediction and I have not, naturally you and I will be in conflict.	हमारे लिए अच्छी तरह और गहराई तक यह समझ लेना अत्यंत कठिन है कि प्रेम को किसी भी तरह से मन का इच्छित लक्ष्य नहीं बनाया जा सकता। यदि हम यह बात वास्तव में और गहराई से समझ लें तो कुछ ऐसा ग्रहण कर पाने की संभावना बनती है जो अलौकिक है, इस दुनिया का नहीं है। उसके स्पर्श के बिना हम चाहे जो करते रहें, हमारे संबंधों में स्थायी प्रसन्नता नहीं आ सकती। यदि आप उस प्रेम को, उस आशिष को ग्रहण कर पाये हैं और

You may not be in conflict, but I will be; and in my pain and sorrow I cut myself off. Sorrow is as exclusive as pleasure, and until there is that love which is not of my making, relationship is pain. If there is the benediction of that love, you cannot but love me whatever I may be, for then you do not shape love according to my behavior.	मैं नहीं, तो स्वाभाविक है कि आप और मैं द्वंद्व में रहेंगे। हो सकता है कि आप द्वंद्वग्रस्त न रहें, परंतु मैं तो रहूंगा ही और अपनी इस पीड़ा और दुख के कारण मैं स्वयं को अलग-थलग कर लूंगा। दुख भी उतना ही बिलगावकारी होता है जितना सुख, अतः जब तक मुझ में ऐसा प्रेम न आ जाए जो कि मेरे द्वारा गढ़ा न गया हो, तब तक संबंध पीड़ाप्रद बना रहेगा। जब प्रेम का आविर्भाव हो जाता है तब मैं जैसा भी हूं, आप मुझे प्रेम करेंगे ही, क्योंकि तब आप प्रेम को मेरे बर्ताव के अनुसार रूप व आकार नहीं दे रहे होंगे।
-7-	-७-
What Makes Us Stale in Relationship?	वह क्या है जो हमारे संबंधों में नीरसता ले आता है
If you observe, what makes us stale in our relationship is thinking, calculating, judging, weighing, adjusting ourselves; and the one thing that frees us from that is love, which is not a process of thought.	यदि आप ध्यान दें तो आप देखेंगे कि जो चीज़ हमारे संबंधों में नीरसता ले आती है वह है विचार करना, हिसाब-किताब करना, गुण-विवेचन करना, मूल्यांकन करना, स्वयं को काट-छांट करके दूसरे के अनुकूल बनाना। और, जो वास्तव में हमें इस सब से मुक्त करती है वह है प्रेम, जो कि विचार की प्रक्रिया नहीं है।
-8-	-८-
When There Is No Love, We Invent Marriage	प्रेम का अभाव है विवाह का आविष्कार
When there is no love, then the framework of marriage as an institution becomes a necessity. When there is love, then sex is not a problem—it is the lack of love that makes it into a problem. Don't you know? When you love somebody really deeply—not with the love of the mind, but realiy from your heart—you share with him or her everything that you have, not your body only, but everything. In your trouble, you ask her help and she helps you. There is no division between man and woman when you love somebody, but there is a sexual problem when you do not know	जब प्रेम न हो, तब एक संस्था के रूप में विवाह की स्थापना आवश्यकता बन जाती है। यदि प्रेम है तो यौनाचार कोई समस्या नहीं बनता--यह तो प्रेम का अभाव है जो इसे समस्या बना देता है। आप जानते हैं न, कि जब आप किसी से वास्तव में –गहराई से प्रेम करते हैं--मन के स्तर पर नहीं, बल्कि दिल की गहराइयों से--तब आप उस साथी के साथ हर उस चीज़ को बांटते हैं जो आपके पास है, केवल तन ही नहीं बल्कि सब कुछ। अपनी कठिनाई में आप उससे सहायता के लिये कहते हैं और वह सहायता करता है या करती है। जब आप किसी से प्रेम करते हैं तब पुरुष या स्त्री जैसा कोई विभाजन रह नहीं जाता, परंतु

that love.	जब आप उस प्रेम को नहीं जानते हैं, तब यौनाचार समस्या बन जाता है।
-9-	-६-
Gratification Is Not the Flame of Love	तुष्टि में प्रेम की लौ नहीं होती
Questioner: You have talked about relationship based on usage of another for one's own gratification, and. you have often hinted at a state called love. What do you mean by love?	प्रश्नकर्ताः आपने स्वयं की तुष्टि के लिये दूसरे का उपयोग करने पर आधारित संबंध की बात कही है, और आपने अक्सर उस अवस्था की ओर भी संकेत किया है जिसे प्रेम कहा जाता है। आपका प्रेम से तात्पर्य क्या है?
Krishnamurti: We know what our relationship is—a mutual gratification and use, though we clothe it by calling it love. In usage there is tenderness for and the safeguarding of what is used. We safeguard our frontier, our books, our property; similarly, we are careful in safeguarding our wives, our families, our society, because without them we would be lonely, lost. Without the child, the parent feels lonely; what you are not, the child will be, so the child becomes an instrument of your vanity. We know the relationship of need and usage. We need the postman and he needs us, yet we don't say we love the postman. But we do say that we love our wives and children, even though we use them for our personal gratification and are willing to sacrifice them for the vanity of being-called patriotic. We know this process very well, and obviously, it cannot be love. Love that uses, exploits, and then feels sorry, cannot be love because love is not a thing of the mind.	कृष्णमूर्तिः हम जानते हैं कि हमारे संबंध क्या हैं--वे पारस्परिक तुष्टीकरण और उपयोग ही तो हैं, यद्यपि हम उन्हें प्रेम नाम की चादर ओढ़ा देते हैं। उपयोगिता में, जिस चीज़ का हम उपयोग करते हैं, उसके प्रति सहृदयता और उसकी सुरक्षा का भाव तो हमारे मन में रहता ही है। हम अपनी सरहदों की, अपने ग्रंथों और संपत्ति की सुरक्षा करते हैं। इसी प्रकार हम अपनी पत्नियों, अपने परिवारों और अपने समाज की सुरक्षा के प्रति सावधान रहते हैं, क्योंकि उनके बिना तो हम अकेले पड़ जाएंगे, कहीं के नहीं रहेंगे। बच्चे के बिना अभिभावक अकेला महसूस करते हैं। जो आप नहीं हो सके, बच्चा वह बनेगा, और, इस प्रकार बच्चा ग़ुरूर का, फख-औ'-नाज़ का साधन बन जाता है। हम आवश्यकता और उपयोग का ही संबंध जानते हैं। हमें डाकिये की आवश्यकता है और उसे हमारी, फिर भी हम यह नहीं कहते कि हम डाकिये को प्रेम करते हैं, परंतु हम यह तो कहते ही हैं कि हम अपनी पत्नी और बच्चों को प्रेम करते हैं, भले ही हम उनका अपनी व्यक्तिगत तुष्टि के लिये उपयोग करते हों, और देशभक्त कहलाये जाने के गर्व के लिए हम उनकी बलि देने को तैयार रहते हैं। हम इस प्रक्रिया को भली-भांति जानते हैं, और यह बात साफ है कि इसे प्रेम नहीं कहा जा सकता। वह प्रेम जो उपयोग करता है और फिर खेद महसूस करता है, वह प्रेम नहीं हो सकता, क्योंकि प्रेम मन का मामला नहीं होता।
Now, let us experiment and discover what love is—discover, not merely	आइए अब हम परखें, अन्वेषण करें कि प्रेम क्या है--इसका अन्वेषण केवल शाब्दिक रूप में

verbally, but by actually experiencing that state. When you use me as a guru and I use you as disciple, there is mutual exploitation. Similarly, when you use your wife and children for your furtherance, there is exploitation. Surely, that is not love. When, there is use, there must be possession; possession invariably breeds fear, and with fear come jealousy, envy, suspicion. When there is usage, there cannot be love, for love is not something of the mind. To think about a. person is not to love that person. You think about a person only when that person is not present, when he is dead, when he has run off, or when he does not give you what you want. Then your inward insufficiency sets the process of the mind going. When that person is close to you, you do not think of him; to think of him when he is close to you is to be disturbed, so you take him for granted—he is there. Habit is a means of forgetting and being at peace so that you won't be disturbed. So, usage must invariably lead to invulnerability, and that is not love.	न करके उस अवस्था को वास्तव में अनुभूत करें। जब आप मुझे गुरु के रूप में और मैं आपको शिष्य के रूप में इस्तेमाल करता हूं, तब यह पारस्परिक शोषण हुआ। इसी प्रकार जब आप अपनी पत्नी या बच्चों को अपनी बेहतरी या बढ़ोतरी के लिये प्रयोग करते हैं, तब वह भी शोषण ही है। निश्चय ही, वह प्रेम नहीं है। जब प्रयोग होता है तब स्वामित्वभाव तो होगा ही, और स्वामित्व निश्चित रुप से भय को जन्म देता है, और भय के साथ ईर्ष्या, डाह और शक भी चले आते हैं। जहां उपयोग होता है वहां प्रेम नहीं हो सकता, क्योंकि प्रेम मन का मामला नहीं है। किसी व्यक्ति के बारे में सोचना उससे प्रेम करना नहीं होता। आप किसी व्यक्ति के बारे में तभी सोचते हैं जब वह उपस्थित न हो, या वह मर चुका हो, या आपको छोड़कर चला गया हो, या जब वह आपको 'वह' कुछ न दे रहा हो जो आप उससे चाहते हैं। तब आपकी आतंरिक अपूर्णता मन को सोचने की प्रक्रिया में डाल देती है। यदि वह व्यक्ति आपके निकट ही है तब आप उसके बारे में नहीं सोचते। उसके निकट रहते उसके बारे में सोचना तो बेचैन और अशांत होना है, क्योंकि आप यह मानकर चलते हैं कि वह यहीं तो है। आदत तो भूलने और शांति के साथ रहने का एक साधन है, ताकि आप चैन से रह सकें। इस प्रकार, उपयोग हमें अपरिहार्य रूप से अनम्यता की ओर, असंवेदनशीलता की ओर ले जाता है--और, यह प्रेम नहीं होता।
What is that state when usage—which is thought process as a means to cover the inward insufficiency, positively or negatively—is not? What is that state when there is no sense of gratification? Seeking gratification is the very nature of the mind. Sex is sensation which is created, pictured by the mind, and then the mind acts or does not act. Sensation is a process of thought, which is not love. When the mind is dominant and the thought process is important, there is no love. This process of usage, thinking, imagining, holding, enclosing, rejecting, is all smoke, and when the smoke is not, the flame of love is. Sometimes we do	वह कौन सी अवस्था है जब सकारात्मक या नकारात्मक रूप से अपनी आंतरिक अपूर्णता को ढांपने के लिये साधन रूपी यह विचार प्रक्रिया अर्थात यह उपयोग न हो? वह कौन सी अवस्था है, जिसमें आत्म-तुष्टि का कोई भाव ही न हो? आत्म-तुष्टि चाहना मन का मौलिक स्वभाव है। सेक्स एक संवेदन है--मन द्वारा चित्रित व रचित--फिर मन या तो कुछ करता है या नहीं करता। यह सनसनाहट विचार का खेल है--प्रेम नहीं है। जहां मन हावी होता है और विचार प्रक्रिया महत्त्वपूर्ण, तो वहां प्रेम नहीं होता। उपयोग की, विचारणा की, कल्पना की, स्वामित्व की, अपने खोल में सिमटे रहने की, अलगाव की यह प्रक्रिया--यह सब धुआं है और जब यह धुआं नहीं रहता,

have that flame, rich, full, complete; but the smoke returns...	तभी प्रेम की लौ जगती है। कभी-कभी यह दीप्यमान्, भरपूर, संपूर्ण लौ हममें जगती तो है, परंतु धुआं पुनः लौट आता है...
-10-	-१०-
Don't Debate Opposites: Neither Celibacy nor Promiscuity	ब्रह्मचर्य या स्वच्छंद यौनाचार--इन विपरीतताओं के समर्थक न बनें
Those who are trying to be celibate in order to achieve God are unchaste for they are seeking a result or gain and so substituting the end, the result, for sex—which is fear. Their hearts are without love... Only when the mind and heart are unburdened of fear, of the routine of sensational habits, when there is generosity and compassion, there is love. Such love-is chaste.	जो लोग ईश्वरप्राप्ति के लिये ब्रह्मचर्य पर चलने का प्रयत्न कर रहे हैं वे अपवित्र हैं, दूषित हैं, क्योंकि वे कोई परिणाम या कुछ हासिल करना चाहते हैं, इसलिए उन्होंने यौनाचार के विकल्प स्वरूप ईश्वर प्राप्ति के इस लक्ष्य, इस परिणाम को अपने सामने रख लिया है--यह उनका भय है। उनका हृदय प्रेमविहीन होता है। मन और हृदय जब भय के भार से और सनसनाहट देने वाली आदतों के चक्र से मुक्त हो जाते हैं, उनमें जब उदारता और करुणा का वास हो जाता है, तब प्रेम विद्यमान रहता है। ऐसा प्रेम ही अदूषित, पवित्र होता है।
-11-	-११-
Why Is It that Sex and Marriage Have Become Such Problems?	ऐसा क्यों है कि यौनाचार और विवाह इतनी बड़ी समस्या बन गये हैं?
How is it possible to meet the sexual demand intelligently and not turn it into a problem?	यौनाचार की मांग को प्रज्ञापूर्वक पूरा करना और उसे समस्या में तब्दील न होने देना कैसे संभव है?
Now, what do we mean by sex? The purely physical act, or the thought that excites, stimulates, furthers that act? Surely, sex is of the mind, and because it is of the mind, it must seek fulfillment, or there is frustration....	यौनाचार या सेक्स से आपका क्या तात्पर्य है? यह पूरी तरह एक शारीरिक क्रिया है या वह विचार है जो इस क्रिया को उत्तेजित करता है, उकसाता है और उसके लिए उतावला बनाता है। निश्चय ही, यौनाचार मन की उपज है, और, चूंकि यह मन की उपज है इसीलिए मन इसे अंजाम देना चाहता है, अन्यथा वह खिन्न, कुंठित हो जाता है...
Why is it that sex has become such a problem in our lives? Let us go into it, not with constraint, not with anxiety, fear, condemnation. Why has it become a problem? Surely, for most of you it is a problem. Why? Probably, you have never	ऐसा क्यों है कि यौनाचार हमारे जीवन की इतनी बड़ी समस्या बन बैठा है। आइए, इस पर विचार-विमर्श करें--कोई लक्ष्मणरेखा खींचे बिना, व्यग्रता, भय या भर्त्सना के बिना देखें कि यह समस्या क्यों बन गया है। निश्चय ही, आपमें से अधिकांश के लिये यह समस्या ही

asked yourself why it is a problem. Let us find out.	है। क्यों? आपने शायद स्वयं से यह नहीं पूछा है कि यह एक समस्या क्यों है। आइए, इसका पता लगाएं।
Sex is a problem because it would seem that in that act there is a. complete absence of the self. In that moment you are happy because there is the cessation of self-consciousness, of the 'me'; and desiring more; of it.-more of the abnegation of the self in which there is complete happiness through full fusion, integration, naturally it becomes all-important. Isn't that so? Because it is something that gives me unadulterated joy, complete self-forgetfulness, I want more and more of it. Now, why do I want more of it? Because everywhere else I am in conflict, everywhere else, at all the different levels of existence, there is the strengthening of the self. Economically, socially, religiously, there is the constant thickening of self-consciousness, which is conflict. After all, you are self-conscious only when there is conflict. Self-consciousness is in its very nature the result of conflict. So, everywhere else we are in conflict. In all our relationships with property, with people, with ideas there is conflict, pain, struggle, misery; but in this one act there is complete cessation of all that. Naturally you want more of it because it gives you happiness, while all the rest leads you to misery, turmoil, conflict, confusion, antagonism, worry, destruction; therefore, the sexual act becomes all-significant, all-important.	यौनाचार एक समस्या है, क्योंकि, ऐसा प्रतीत होता है कि इस क्रिया में अहं का, स्व का संपूर्ण अभाव हो जाता है। उस पल आप सुखमय हो जाते हैं क्योंकि उस पल खुदी के एहसास का, 'मैं' का अवसान हो गया होता है। इसीलिए इसे अधिकाधिक चाहना--पूर्ण एकीकरण और विलय के फलस्वरूप भरपूर खुशी देने वाली स्व-निषेध की इस अवस्था को और-और चाहना--स्वभावतः महत्त्वपूर्ण हो जाता है। क्योंकि यह कुछ ऐसा है जो मुझे विशुद्ध आह्लाद और पूर्ण आत्म-विस्मरण का लाभ देता है, अतः मैं इसे बारंबार चाहता हूं। परंतु मैं इसे अधिकाधिक चाहता क्यों हूं? क्योंकि अन्यत्र सर्वत्र मैं द्वंद्वमय रहता हूं, क्योंकि अन्यत्र सर्वत्र जीवन के हर स्तर पर अहं, स्व प्रबल होता रहता है। आर्थिक, सामाजिक और धार्मिक रूप से अहंभाव, निरंतर फूलता जाता है--यह द्वंद्व ही है। आखिर, आपको झिझक और जकड़न तभी धर दबोचती है जब द्वंद्व होता है। स्व की पकड़ का, खुदी के एहसास का मतलब ही है द्वंद्व का, टकराव का होना। तो, अन्यत्र सर्वत्र हम द्वंद्व में ही रहते हैं। वस्तुओं, व्यक्तियों और विचारों के साथ अपने संबंधों में हम द्वंद्व, पीड़ा, संघर्ष और दुख के साथ रहते हैं, परंतु इसी एक क्रिया में इन सभी का अवसान हो जाता है। स्वाभाविक ही, आप इसे और-और चाहेंगे क्योंकि यह आप को सुखमय बनाती है। जबकि, अन्य सभी क्रियाएं आपको दुख, विक्षोभ, द्वंद्व, उलझन, विरोध-प्रतिरोध, चिंता और विनाश ही देने वाली होती हैं। ऐसे में यौनाचार ही एकमेव सार्थक और एकमेव महत्त्वपूर्ण घटना जान पड़ती है।
So, the problem is not sex, surely, but how to be free from the self...	तो, निश्चय ही यौनाचार कोई समस्या नहीं है, समस्या है कि 'मैं' से मुक्त कैसे हुआ जाए..
Sirs, the self is not an objective entity that can be studied under the microscope or learned through books or understood through quotations, however weighty those quotations may be. It can be	महोदय, अहं का, स्व का कोई वस्तुगत अस्तित्व नहीं है जिसका अध्ययन-परीक्षण किसी सूक्ष्मदर्शी यंत्र के नीचे रखकर अथवा ग्रंथों या सूत्रों के माध्यम से किया जा सके--भले ही वे कितने भी अर्थपूर्ण और

understood only in relationship. After all, conflict is in relationship, whether with property, with an idea, with your wife, or with your neighbor; and without solving that fundamental conflict, merely to hold onto that one release through sex, is obviously to be unbalanced. And that is exactly what we are. We are unbalanced because we have made sex the one avenue of escape; and society, so-called modern culture, helps us to do it. Look at the advertisements, the cinemas, the suggestive gestures, postures, appearances.	दमदार क्यों न हों। इसे तो केवल संबंधों में ही समझा जा सकता है। आखिर, द्वंद्व भी तो संबंधों में ही होता है, चाहे वह वस्तु के साथ हो, विचार के साथ हो, अपनी पत्नी या अपने पड़ोसी के साथ हो। इस प्रकार इस मूलभूत द्वंद्व का निवारण किये बिना, यौनाचार से अपेक्षित बस उस निजात से, उस रिहाई से चिपके रहना निश्चित ही असंतुलन की निशानी है। और, ठीक ऐसा ही तो है हमारे साथ। हम असंतुलित हैं, क्योंकि यौनाचार हमारे लिए पलायन की राह बन गया —है, और यह समाज और तथाकथित आधुनिक संस्कृति ऐसा करने में हमारा साथ दे रहे हैं। तनिक इन विज्ञापनों, सिनेमाओं, व्यंजक मुद्राओं व भाव-भंगिमाओं और देह-प्रदर्शनों को तो देखिए।
Most of you married when you were quite young, when the biological urge was very strong. You took a wife or a husband, and with that wife or husband you jolly well have to live for the rest of your life. Your relationship is merely physical, and everything else has to be adjusted to that. So what happens? You are intellectual, perhaps, and she is very emotional. Where is your communion with her? Or she is very practical, and you are dreamy, vague, rather indifferent. Where is the contact between you and her when you use her? Our marriages are now based on that idea, on that urge; but more and more there are contradictions and great conflicts in marriage, and so divorces.	आप में से अधिकांश का विवाह तभी हो गया था जब आप बिलकुल युवा थे, जब शारीरिक आवेग प्रबल था। आपने पत्नी या पति को पा लिया, और उस पत्नी या पति के साथ आपको अपनी बाकी ज़िंदगी बितानी है। और आपका संबंध केवल शारीरिक होता है, और अन्य सभी बातें या चीज़ें उसी के अनुसार समायोजित कर ली जाती हैं। फिर क्या होता है? आप शायद बुद्धिजीवी हों और वह बहुत भावुक हो, आपका उससे मिलना कहां हो पाता है? या, वह बहुत यथार्थवादी हो और आप कल्पनाओं में खोये रहने वाले, अनिश्चित, और कुछ हद तक उदासीन। तो, जब आप उसका उपयोग करते हैं तब आपका और उसका संबंध क्या हो पाता है? हमारे विवाह उसी धारणा, उसी आवेग पर आधारित हैं, और इन विवाहों में जितने अधिक विरोध-प्रतिरोध और द्वंद्व पनप रहे हैं, उतने ही तलाक बढ़ रहे हैं।
So, this problem requires intelligent handling, which means that we have to alter the whole basis of our education; and that demands understanding not only the facts of life but also our everyday existence, not only knowing and understanding the biological urges, the sexual urge, but also seeing how to deal with it intelligently.	तो इस समस्या को समझदारी से सुलझाया जाना चाहिए, जिसका अर्थ है कि हमें अपनी शिक्षा का संपूर्ण आधार बदलना होगा, परंतु इसके लिए जीवनविषयक तथ्यों को ही नहीं, बल्कि दिन-प्रतिदिन के जीवन को भी समझने की आवश्यकता है, केवल शारीरिक आवेगों, यौनावेग को ही जानने-समझने की नहीं, बल्कि यह देखने की भी आवश्यकता होगी कि हम इस सब के साथ प्रज्ञापूर्वक कैसे दो-चार हों।

-12-	-१२-
Insight Sees the Limits of Thought In All of This	अंतर्दृष्टि इस सब में विचार की सीमाओं को देख पाती है
Mercy and pity, forgiveness and respect are not emotions. There is love when sentimentality and emotion and devotion cease. Devotion is not love; devotion is a form of self-expansion. Respect is not for the few, but for man, whether he is low or high. Generosity and mercy have no reward.	दया और तरस, क्षमा और आदर--ये भावनाएं नहीं हैं। प्रेम तब आता है जब भावुकता, भावावेग और उपासना-भाव का अवसान हो जाता है। उपासना प्रेम नहीं होती, वह तो अहं-विस्तार का ही एक रूप है। आदर थोड़े से लोगों के लिये ही नहीं बल्कि मानव मात्र के लिये हो, आदर का ऊंचे-नीचे से कोई सरोकार नहीं होता। उदारता और दया का कोई पारितोषिक नहीं होता।
Love alone can transform insanity, confusion, and strife. No system, no theory of the left or of the right can bring peace and happiness to man. Where there is love, there is no possessiveness, no envy; there is mercy and compassion, not in theory, but actually to your wife and to your children, to your neighbor...	एकमेव प्रेम ही उन्माद, विभ्रम और कलह का रूपांतरण कर सकता है। अन्य कोई भी ढांचा, कोई भी मत-सिद्धांत--चाहे वह वामपंथी हो या दक्षिणपंथी--मानव को शांति व खुशी नहीं दे सकता। जहां प्रेम होता है वहां स्वामित्वभाव की, ईर्ष्या की कोई जगह नहीं, वहां तो विद्यमान होती है उदारता और करुणा--केवल सिद्धांततः नहीं बल्कि वस्तुतः--अपनी पत्नी के प्रति, अपने बच्चों के प्रति, अपने पड़ोसी के प्रति...
There is love with its blessing when 'you' cease to be.	जब 'आप' नहीं रहते तब आता है प्रेम--और वह भी अपने सारे उपहारों के साथ।
-13-	-१३-
Can Love Be Fixed, Static?	क्या प्रेम कुछ ठहर गया-सा और गतिहीन हो सकता है?
An experience of pleasure makes us demand more of it, and the 'more' is this urge to be secure in our pleasures. If we love someone, we want to be quite sure that that love is returned, and we seek to establish a relationship which we at least hope will be permanent. All our society is based on that relationship. But is there anything which is permanent? Is there? Is love permanent? Our constant desire is to make sensation permanent, is it not? And the thing which cannot be made	किसी विषय-सुख का अनुभव उसे पुनः-पुनः पाने की चाहत हम में पैदा कर देता है, तथा यह 'और-और' की चाहत अपने सुख में सुरक्षित रहने की तलब होती है। यदि हम किसी को प्रेम करते हैं तो इस बात की सुनिश्चितता चाहते हैं कि हमें उससे प्रेम का प्रतिदान मिले। इसलिए हम ऐसा संबंध स्थापित करने में लग जाते हैं जिससे हम यह आशा करते हैं कि वह स्थायी रहेगा। हमारा सारा समाज इसी प्रकार के संबंध पर आधारित है। परंतु, क्या इसमें कुछ भी ऐसा है जो स्थायी

discuss, we join various organizations trying thereby to find a remedy to the conflict, to the miseries in our lives. Or, if we don't do all that, we think we have found; that is, we say that a particular organization, a particular teacher, a particular book satisfies us; we have found everything we want in that; and we remain in that, crystallized and enclosed.	आपको किसी के पास जाने की आवश्यकता है? परंतु फिर भी हम यही कुछ किये जा रहे हैं। हम अनगिनत पुस्तकें पढ़ते हैं, अनेक गोष्ठियों में जाते हैं, विचार-विमर्श करते हैं, हम अपने जीवन के द्वंद्व और दुख से छुटकारे के निदान हेतु विभिन्न संगठनों में शामिल हो जाते हैं। अथवा यदि हम यह सब नहीं कर रहे हैं तो हम सोच रहे होते हैं कि हमने पा लिया है अर्थात हम कहने लगते हैं कि अमुक संगठन या अमुक गुरु या अमुक पुस्तक से मैं संतुष्ट हूं, जो कुछ मैं चाहता था मुझे उसमें मिल गया है। और फिर हम उसी में जमे रहते हैं--घनीभूत होकर, चारदीवारी में कैद।
Do we not seek, through all this confusion, something permanent, something lasting, something which we call real, God, truth, what you like—the name doesn't matter, the word is not the thing, surely. So don't let us be caughat in words. Leave that to the professional lecturers. There is a search for something permanent, is there not, in most of us? — something we can cling to, something which will give us assurance, a hope, a lasting enthusiasm, a lasting certainty, because in ourselves we are so uncertain. We do not know ourselves. We know a lot about facts/what the books have said; but we do not know for ourselves, we do not have a direct experience.	इस सारी भ्रांति में, उलझन में क्या हम एक ऐसी चीज़ की तलाश में नहीं होते हैं जो स्थायी हो, सदा विद्यमान रहने वाली हो, एक ऐसी चीज़, जिसे हम यथार्थ, ईश्वर, सत्य या ऐसा ही कोई नाम दे सकें। निश्चय ही, नाम का महत्त्व नगण्य होता है, शब्द यथार्थ नहीं होते। इसलिये शब्दों में मत उलझ जाइए। यह कार्य पेशेवर प्रवक्ताओं के लिये छोड़ दीजिये। अधिकतर लोग ऐसी चीज़ की तलाश में रहते हैं जो स्थायी हो, एक ऐसी चीज़ की तलाश में जिससे हम जुड़े रह सकें, हमें आश्वासन, आशा, दृढ़ उत्साह और एक टिकाऊ निश्चितता देती रहे क्योंकि हम स्वयं में बहुत अधिक अनिश्चित हैं, हम स्वयं को जानते ही नहीं हैं। हम दुनिया भर के तथ्य जानते हैं, पुस्तकों में क्या कहा गया है यह हम जानते हैं, परंतु यह सब हमने स्वयं प्रत्यक्षतः नहीं सीखा होता है।
And what is it that we call permanent? What is it that we are seeking, which will, or which we hope will give us permanency? Are we not seeking lasting happiness, lasting gratification, lasting certainty? We want something that will endure everlastingly, which will gratify us. If we strip ourselves of all the words and phrases, and actually look at it, this is what we want. We want permanent pleasure...	और वह क्या है जिसे हम स्थायी कहते हैं? और वह क्या है जिसकी लालसा में हम इसलिये लगे हैं या इस आशा से लगे हैं कि वह हमें स्थायित्व प्रदान कर देगा? क्या हम स्थायी सुख-चैन, स्थायी परितोष, स्थायी निश्चितता की लालसा में नहीं लगे हुए हैं? हम कोई ऐसी चीज़ चाहते हैं जो सदा-सर्वदा के लिये टिकी रहे, जो हमें परितोष देती रहे। यदि हम अपनी चाहना पर चढ़े सारे शब्द-आडंबरों को उतार दें और फिर वस्तुतः उसे देखें तो पाएंगे कि सचमुच यही तो है जो हम चाह रहे हैं। हम सदा-सर्वदा रहने वाला सुख-विलास चाहते हैं ....

permanent, which is love, passes us by.	है? है कुछ? क्या प्रेम स्थायी है? संवेदन को स्थायी बनाने की हमारी निरंतर इच्छा रहती है, है न? और ऐसा कुछ हमारे पास से गुज़र कर निकल जाता है जिसे स्थायी बनाना संभव नहीं है--और वह है प्रेम।
-14-	-१४-
In Considering Marriage: Where You Are Important, Love Is Not	विवाह के संदर्भ में : यदि आप महत्त्वपूर्ण हैं, तो प्रेम नहीं होगा
We are trying to understand the problem of marriage, in which is implied sexual relationship, love, companionship, communion. Obviously if there is no love, marriage becomes a disgrace, does it not? Then it becomes mere gratification. To love is one of the most difficult things, is it not? Love can come into being, can exist only when the self is absent. Without love, relationship is a pain; however gratifying, or however superficial, it leads to boredom, to routine, to habit with all its implications. Then, sexual problems become all important. In considering marriage, whether it is necessary or not, one must first comprehend love. Surely love is chaste; without love you cannot be chaste; you may be a celibate, whether a man or a woman, but that is not being chaste, that is not being pure, if there is no love. If you have an ideal of chastity, that is if you want to become chaste, there is no love in it either because it is merely the desire to become something which you think is noble, which you think will help you to find reality; there is no love there at all. Licentiousness is not chaste, it leads only to degradation, to misery. So does the pursuit of an ideal. Both exclude love, both imply becoming something, indulging in something; and therefore you become important, and where you are important, love is not.	हम प्रेम की समस्या को समझने का प्रयास कर रहे हैं और इसमें यौन-संबंध, प्रेम, संग-साथ, सम्मिलन--सभी समाहित है। यह स्पष्ट है कि यदि प्रेम का अभाव है, तो विवाह एक अशोभनीय स्थिति बन जाता है, है न? तब यह केवल तुष्टीकरण रह जाता है। प्रेम करना कठिनतम कार्यों में से एक है। प्रेम का आगमन, प्रेम का अस्तित्व तभी हो सकता है जब अहं न रहे। प्रेम के अभाव में संबंध एक पीड़ा बन कर रह जाता है। वह संबंध चाहे जितना तुष्टिकारक हो अथवा सतही हो, वह ऊबन की ओर, एक दस्तूर या आदत बन जाने की ओर चलने लगता है, जहां इनसे संबंधित उलझाव भी इनमें शामिल होते चले जाते हैं। तब यौनाचार-समस्या सर्वप्रमुख हो जाती है। विवाह के बारे में यह विचार करने से पूर्व कि यह आवश्यक है या नहीं, हमें सर्वप्रथम इसका व्यापक अर्थ समझ लेना चाहिये। निश्चय ही प्रेम पवित्र होता है। प्रेम के बिना आप पवित्र 'हो' नहीं सकते। भले ही आप, पुरुष या स्त्री, यौनाचाररहित जीवन बिता रहे हों, परंतु यदि आप में प्रेम नहीं है तो यौनाचाररहित जीवन जीने भर से आप पवित्र, परिशुद्ध नहीं हो जाते। यदि आपके मन में पवित्रता का कोई आदर्श है अर्थात आप पवित्र बनना चाहते हैं तो इसमें कोई प्रेम नहीं है क्योंकि यह तो आपकी कुछ ऐसा बनने की इच्छा मात्र है जिसे आप आदर्श मानते हैं, जिसे आप सत्य को पाने में सहायक होना मानते हैं--परंतु इसमें लेशमात्र भी प्रेम नहीं होता। स्वेच्छाचारी यौनाचार पवित्रता नहीं है, क्योंकि यह तो पतन की ओर, दुख की ओर ले जाने वाला है। किसी आदर्श का अनुसरण करना भी वहीं ले जाता है। दोनों प्रेम का बहिष्कार करते हैं, दोनों में कुछ बनना, किसी

	चीज़ में लिप्त रहना निहित है, ताकि आप महत्त्वपूर्ण बन जाएं। और, जब आप महत्त्वपूर्ण होते हैं, प्रेम होता ही नहीं।
-15-	-१५-
In Habit There Is No Love	आदत में प्रेम नहीं रहता
Marriage as a habit, as a cultivation of habitual pleasure, is a deteriorating factor, because there is no love in habit.	वैवाहिक संबंधों का आदत में शुमार हो जाना, उसके सुख का आदी हो जाना उन्हें अवनति की ओर ले जाना है, क्योंकि आदत में प्रेम नहीं रह जाता।
It is only for the very, very few who love that the married relationship has significance, and then it is unbreakable, then it is not mere habit or convenience, nor is it based on biological, sexual need. In that love which is unconditional the identities are fused, and in such a relationship there is a remedy, there is hope.	केवल उन बहुत ही थोड़े से लोगों के लिए, जो प्रेम करते हैं, वैवाहिक संबंध सार्थक होते हैं, और तब वह संबंध अटूट होता है, तब वह उनके लिए कोई आदत या सुविधा नहीं रह जाता और न ही वह शारीरिक अथवा यौन आवश्यकताओं पर टिका रहता है। बिना किसी शर्त किये जाने वाले उस प्रेम में दोनों के व्यक्तित्व का विलय हो जाता है। ऐसे ही संबंधों में समाधान भी निहित है और आशा भी।
But for most of you, the married relationship is not fused. To fuse the separate identities, you have to know yourself, and she has to know herself. That means to love. But there is no love, which is an obvious fact. Love is fresh, new, not mere gratification, not mere habit. It is unconditional. You don't treat your husband or wife that way, do you? You live in your isolation, and she lives in her isolation, and you have established your habits of assured sexual pleasure. What happens to a man who has an assured income? Surely, he deteriorates. Have you not noticed it? Watch a man who has an assured income and you will soon see how rapidly his mind is withering away. He may have a big position, a reputation for cunning, but the full joy of life is gone out of him.	परंतु आप लोगों में अधिकतर के वैवाहिक संबंधों में यह विलय नहीं हो पाता। आप दो भिन्न व्यक्तियों के विलय के लिये आवश्यक है कि आप स्वयं को जानें और दूसरा भी स्वयं को जाने। इसका अर्थ हुआ प्रेम करना। परंतु आपके संबंधों में प्रेम तो है ही नहीं--और यह एक सीधी-सादी सच्चाई है। प्रेम सदा नूतन व नवीन रहता है, न यह तुष्टीकरण होता है और न ही यह आदत बन जाता है। यह निरपेक्ष--बिना शर्त होता है। आप अपने पति या अपनी पत्नी के साथ यह प्रेम नहीं करते, नहीं न? आप अपने खोल में बंद रहते हैं और वह अपने खोल में। आपने एक सुनिश्चित यौन-संबंध की एक आदत सी पाल ली है। जिस व्यक्ति की आय सुनिश्चित हो जाती है, उसका क्या होता है? निश्चय ही, उसका ह्रास होने लगता है। आपने ऐसा देखा है न? जिस व्यक्ति की आय सुनिश्चित हो गई हो, उसे ध्यान से देखिए । आप देखेंगे कि कितनी तेजी से उसका मन बिखरता-मुरझाता जा रहा है। भले ही उसकी ऊंची प्रतिष्ठा हो, मान-सम्मान हो, परंतु जीवन का वास्तविक

	आनंद तो उसमें से तिरोहित हो गया होता है।
Similarly, you have a marriage in which you have a permanent source of pleasure, a habit without understanding, without love, and you are forced to live in that state. I am not saying what you should do, but look at the problem first. Do you think this is right? It does not mean that you must throw off your wife and pursue someone else. What does this relationship mean? Surely, to love is to be in communion with somebody, but are you in communion with your wife, except physically? Do you know her, except physically? Does she know you? Are you not both isolated, each pursuing Ms or her own interests, ambitions, and needs, each seeking from the other gratification, economic or psychological security? Such a relationship is not a relationship at all—it is a mutually self-enclosing process of psychological, biological, and economic necessity—and the obvious result is conflict, misery, nagging, possessive fear, jealousy, and so on.	इसी प्रकार आपका विवाह हो गया है जिससे आप को स्थायी विषय-सुख उपलब्ध होने लगा है--यह एक ऐसी आदत बन चुका है जिसमें कोई समझ नहीं है, कोई प्रेम नहीं है, बस आप इस अवस्था में रहने के लिये बाध्य रहते हैं। मैं यह नहीं कह रहा हूं कि आपको क्या करना चाहिए, मेरा तो कहना यह है कि पहले समस्या को तो देखिए। क्या आप –समझते हैं कि यह अवस्था सही है? इसका यह अर्थ बिल्कुल नहीं है कि आप अपनी पत्नी को परे धकेल दें और किसी अन्य के पीछे लग जाएं। संबंध का अर्थ क्या है? निश्चय ही, इसका अर्थ है किसी के साथ एकलय होकर रहना। परंतु आपकी अपनी पत्नी के साथ शारीरिक घनिष्ठता के अलावा भी क्या कोई घनिष्ठता है? एक शरीर के अलावा क्या आप उसे अन्यथा भी जानते-समझते हैं? क्या वह आपको जानती-समझती है? क्या आप दोनों ही अपने-अपने खोल में बंद नहीं हैं? दोनों में से हर एक क्या अपने ही हितों, आकांक्षाओं और आवश्यकताओं की तलाश में नहीं रहता, क्या हर एक दूसरे से तुष्टीकरण तथा आर्थिक या मनोवैज्ञानिक सुरक्षा की चाह में नहीं रहता? ऐसा संबंध कोई संबंध नहीं है--यह तो मनोवैज्ञानिक, शारीरिक और आर्थिक आवश्यकताओं के लिए पारस्परिक रूप से एक छत के नीचे रहने का सिलसिला मात्र है--और इसका स्पष्ट दिखता परिणाम है द्वंद्व, दुख, छिद्रान्वेषण, स्वामित्वभाव व उससे जुड़ा भय, ईर्ष्या आदि-आदि।
So marriage as a habit, as a cultivation of habitual pleasure, is a deteriorating factor because there is no love in habit. Love is not habitual; love is something joyous, creative, new.	अतः आदत बना हुआ विवाह और उसमें विषय-सुख का आदी हो जाने की अवस्था विवाह को विरस करने वाला कारक है, क्योंकि आदत में प्रेम नहीं रह जाता। आदी हो जाना प्रेम नहीं है। प्रेम तो कुछ ऐसी अवस्था है जो आह्लादप्रद, रचनात्मक और नित नूतन है।
CHAPTER SIX	**अध्याय छः**
Passion	**उत्कटता**
-1-	-१-